Choice Based Credit System
(CBCS Pattern)
Course Curriculum (Syllabus)
of
JYOTIRVIGYAN

DEENDAYAL SODH KENDRA
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY
KANPUR-208024
(YEAR-2022-23)

CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY, KANPUR-208024
Master of Jyotirvigyan Programme

Post Graduation (Jyotirvigyan)
Choice Based Credit System (CBCS Pattern)
Course Curriculum (Syllabus)

Name of the Program	**M.A. in Jyotirvigyan**
Name of the Faculty	Faculty of Arts
Name of the Department	Jyotirvigyan Department
Examination Type	Semester
Program Duration 02 Years	(04 Semsesters)
Total Credit	96

Regulations 2022-23

Choice Based Credit System (CBCS Pattern) Programme: Master of Jyotirvigyan

1. Applicability

These regulations shall apply to the Master in Jyotirvigyan programme from the session 2022-23.

2.Minimum Eligibility for admission

A three/four-year Bachelor's degree or equivalent any graduate degree awarded by a University or Institute established as per law and recognised as equivalent by this University shall constitute the minimum requirement for admission to the Master in Jyotirvigyan programme.

3- Programme Objectives

Jyotirvigyan is a scientific knowledge of the ancient India and there is an urgent need to rejuvenate this science in society to allow this scientific knowledge of Astrology to reach to the society at large and to provide opportunities to get this important knowledge exported to the entire world. The programme aims to equip students to get ancient vedic astronomical and astrological facts in modern and scientific aspect.

4. Programme Outcomes

'यो ज्योतिषं वेत्ति नरः स सम्यग् धर्मार्थकामान् लभते यशश्च।।

(भास्कराचार्य प्रणीत, सिद्धान्त शिरोमणि, मध्यमाधिकार–12)

जो विद्यार्थी ज्योतिषशास्त्र को जानता है, वह धर्म, अर्थ काम और यश को प्राप्त करता हैं। ज्योतिर्विज्ञान को पढ़ने से समृद्धयानन्द और शान्त्यानन्द की प्राप्ति होती है। आज के युग में देश–विदेश में ज्योतिष के ज्ञानियों की आवश्यकता हैं।

ज्योतिर्विज्ञान में परास्नातक का अध्ययन करके विद्यार्थी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नेट, जे0 आर0 एफ, पोस्ट डाक्टोरल फेलो की प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके ज्योतिष विषयक शोध कार्यो को करके विभिन्न विश्वविद्यालय में संचालित ज्योतिष विभागों में शिक्षण कार्य कर सकते हैं। ज्योतिर्विज्ञान विषय में परास्नातक के अन्तर्गत छात्र विभागीय वेधशाला के माध्यम से आकाशीय ग्रहों का वेध करके पच्चांग की शुद्धता का परीक्षण करते हुये पच्चांग का कार्य कर सकते हैं। देश तथा विदेश में भारतीय वेधशाला का निर्माण तथा उनके पर्यवेक्षण का कार्य कर सकते हैं। इसके साथ ही ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों के आधार पर अर्वाचीन काल में नये सॉफ्टवेयरों का सृजन भी कर सकते है।

5- Specific Programme Outcomes

सार्वजनिक क्षेत्र में भी छात्र ज्योतिष के व्यवहारिक सिद्धान्तों के आधार पर फलित ज्योतिष, अंकशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तथा मौसम विज्ञान इत्यादि क्षेत्रों में परामर्श देकर रोजगार का सृजन कर सकते है। ज्योतिष का अध्ययन करके विद्यार्थी प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं वेब मीडिया जैसे बेबसाइट, यूट्यूब चैनलों आदि में कार्य करके आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति कर सकते है। विभिन्न मोबाइल कम्पनियों के काल सेन्टरों में, चिकित्सा क्षेत्र में मेडिकल ज्योतिष के माध्यम से अनेक विद्यार्थी ज्योतिषीय परामर्श दे सकते हैं।

About the degree

- Degree-Degree means Post Graduate Degree.
- Title of degree-The title of degree shall be 'Master of Jyotirvigyan'
- Duration of Programme- Duration of the Master of Jyotirvigyan course
- shall be of two year academic years consisting of 1st Semester & 2nd Semester in the First year and 3rd & 4th Semester in Second year.
- परास्नातक एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान पाठ्यकम द्विवर्षीय होगा जिसमें चार सेमेस्टर होंगे।

सेमेस्टर पद्धति में प्रत्येक प्रश्न पत्र के अंक 100 हांगे, जिनके अंक का विभाजन इस प्रकार होगा–

(क)	मध्य सेमेस्टर परीक्षण (Mid Semester Test)	15 अंक
(ख)	कक्षा में उपस्थित ; (Class Attendance)	05 अंक
(ग)	गृह दत्तकार्य कक्षा में प्रसतुतीकरण (Home Assignment/Class Presentation) (Home Assignment/Class Presentation)	10 अंक
(घ)	सेमेस्टर के अन्त में परीक्षा (Mid Semester Test)	70 अंक
		कुल 100 अंक

निर्देश : परास्नातक ; के प्रथम तथा द्वितीय वर्ष सेमेस्टर पद्धति के प्रश्नपत्रों में विषयानुरूप उत्पत्ति, प्रमेय, निर्मेय, समाधान, व्याख्या, अनुवाद तथा आलोचनात्मक और समीक्षात्मक प्रश्न होंगे।

(15+05+10) + 70 = 100

30 + 70 = 100

6. Course Structure

The course structure of the Master in Jyotirvigyan programme shall be as under :

Course No.	Name of the Course	Marks
	Semester I	
JVCC-101	Siddhant Jyotirvigyan	70
JVCC-102	Karana Jyotirvigyan	70
JVCC-103	Hora Jyotish	70
JVCC-104	Vastu Jyotish	70
JVCC-105	Brahmana Tatha Khagola vigyan	70
JVVC-101	Panchanga Tatha Janmpatrika nirmana Paddhati	70
	Semester Total	420
	Semester II	
JVCC-201	Saiddhantik jyotirvigyan	70
JVCC-202	Jataka Shastra	70
JVCC-203	Muhurta Jyotish	70
JVCC-204	Samudrik Shastra	70
JVCC-205	Vedang Jyotish	70
JVCC-206	Bhartiya Vedhashala tatha prayog	70
JVVNC-201	Grahopchar Paddhati	70
	Semester Total	490
	Semester III	
JVCC-301	Siddhant Jyotish	70
JVCC-302	Karana Jyotish	70
JVEL-301A/B/C	Parashar Jyotish/Jamini Jyotish/Tajik Jyotish	70
JVEL-302A/B/c	KrishnaMURTI Paddhati/Sanhita(Medini) Jyotish/Moocs Courses	70
JVIN-301	Summer Internship	70
JVIER-301	COMPUTER TATHA JYOTISH	70
	Semester Total	420
	Semester IV	
JVCC-401	Gola-Jyotirganita	70
JVEL-401A/B/C	Gochar Tatha Ashtakvarga/Prashna Jyotish/Dasha Phal Niranaya	70
JVEL-402A/B/C	Ank Jyotish/ Nadi jyotish/ Saya Tatha Vrishti Vigyan	70
JVMT-401	Project-Work/Dissertation	100
JVIRA-401	Samanya Karmakand Paddhati	70
	Semester Total	380
	GRAND TOTAL	1710

JV-JYOTIRVIGYAN; JVCC – Core Course; JVVC-Value added course (Credited); JVVNC-Value added course (Non Credited); JVEL-Elective; JVIER-Interdepartmental Course; JVIRA- Interdepartmental course

FIRST SEMESTER

SEMESTER: I
Core Courses
Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-101: Siddhant Jyotirganita
(सिद्धान्त ज्योतिर्गणित)

[A] Objective **Maximum Marks 100 (70+30)** **Total Credit-04**

सिद्धान्त ज्योतिर्गणित के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को काल के विषय में विभिन्न ईकाईयों; त्रुटि से लेकर प्रलय पर्यन्त, सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग के समय का ज्ञान कराना है। भगण कर जानकारी, ब्रम्हाण्ड में गतिशील ग्रहों के स्पष्ट – मध्यम स्थिति का आनययन तथा ग्रहों की कक्षा का ज्ञान कराना है। इसके अध्यापन का उद्देश्य अधिमास निर्णय करना एवं भूपरिधि का ज्ञान कराना है।

[B] Outcome

इस पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- काल की विभिन्न इकाईयों एवं ग्रहों के भगण का ज्ञान।
- स्पष्ट एवं मध्यम ग्रह का आनयन तथा ग्रह कक्षा का ज्ञान
- अधिमास एवं क्षयमास का ज्ञान तथा भूपरिधि का ज्ञान।
- ज्या, कान्ति, भुज–कोटि, मन्दफल एवं शीघ्रफल का साधन।
- पलभा एवं लंकोदय, स्वोदयमान, भुजान्तर एवं उदयान्तर साधन।
- स्वरोजगार हेलु पच्चंग निर्माण के मौलिक तत्वों का ज्ञान।

[C] Contents: Unit Wise Division

Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय
(कालमानाध्याय तथा भगणाध्याय)

Unit-II सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय
(ग्रहानयनाध्याय तथा कक्षाध्याय)

Unit-III सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय
(अधिकमासादिनिर्णयाध्याय तथा भूपरिध्यध्याय)

Unit-IV सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय
(ज्यासाधनम, परमकान्ति साधन, भुज–कोटि आनयन,मन्दफल तथा शीघ्रफलमसाधन)

Unit-IV सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (पलभानयन, पच्चंज्यासाधनम्, लङ्कोदयसाधन, भुजान्तर तथा उदयान्तर)

[D] Readings

Books:

1. सिद्धान्तशिरोमणि गणिताध्याय–भास्कराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार–पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी
2. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–मुरलीधर ठक्कुर
3. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
4. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–टीकाकार–पं. सत्यदेव शर्मा
5. सचित्र ज्योतिष शिक्षा (गणित खण्ड) प्रथत–बी0एल0 ठाकुर
6. सिद्धान्तशिरोमणि गणिताध्याय–भास्कराचार्य–हिन्दी टीकाकरण–केदार दत्त जोशी

SEMESTER: I

Core Courses

Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)

JVCC-102: Karana Jyotirganita

(करण ज्योतिर्गणित)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

करण ज्योतिर्गणित के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रहलाघव के अनुसार सूर्यादिक ग्रहों की मध्यम एवं स्पष्ट स्थिति का ज्ञान, दिक्–देश–काल, लग्न साधन, अयनांश, नत एवं उननतकाल का ज्ञान प्राप्त कराना तथा कान्ति साधन, अक्षांश, से नतांश–उन्नतांश साधन, दिक् साधन एवं ग्रह वेध हेतु नलिका बन्धन की जानकारी प्राप्त कराना हैं।

[B] Outcome

इस पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- अहर्गण साधन, मध्यम, रवि–बुध–शुक साधन गुरू एवं शनि साधन का ज्ञान।
- भुज–कोटि, मन्दफल, चरखण्ड, अयनांश एवं पच्चांग साधन; तिथि–वार–नक्षत्र–योग–करण।
- पंचतारा मंगल–बुद्ध–बुद्ध–गुरू–शुक–शनि, ग्रहो के शीघ्रफल साधन का ज्ञान।
- लग्न साधन, अयनांश साधन, दिनमान तथा नतोन्नतकाल का ज्ञान।
- कान्ति साधन, अक्षांश से नतांश साधन एवं दिक् साधन का ज्ञान।
- सामान्य गणितीय विधि इसे पच्चांग परम्परा का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I ग्रहलाघव (मध्यमाधिकार)

Unit-II (ग्रहलाघव (रविचन्द्रस्पष मध्यमाधिकार)

Unit-III (ग्रहलाघव (पच्चंतारास्पष्टीरणाधिकार)

Unit-IV (ग्रहलाघव त्रिप्रश्नाधिकार–लग्नसाधन, अयनांश और दिनमान साधन, नतोन्नत कालज्ञान तथा छायाा से नतकाल का ज्ञान)

Unit-V ग्रहलाघव (त्रिप्रश्नाधिकार–कान्ति साधन, से नतांश–उन्नतांश साधन, दिक् साधन तथा ग्रहवेध हेतु नलिका बन्धन)

[D] Readings

Books:

1. ग्रहलाघवम् गणेशदैवज्ञ–हिन्दी टीकाकरण–श्री केदारदत्त जोशी
2. ग्रहलाघवम् गणेशदैवज्ञ–हिन्दी व्याख्याकार – प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय
3. ग्रहलाघवम् गणेशदैवज्ञ–हिन्दी अनुवादक–डॉ0 ब्रम्हानन्द त्रिपाठी
4. सचित्र ज्योतिष शिक्षा (गणित खण्ड) द्वितीय–बी0एल0 ठाकुर
5. ज्योतिर्गणितकौमुदी–श्री रजनीकान्त शास्त्री
6. मकरन्दसारिणी–मकरन्दाचार्य–हिन्दी टीकाकरण–आचार्य रामजन्म मिश्र

SEMESTER: I
Core Courses
Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-103: Hora Jyotish
हीरा ज्योतिष

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

होरा ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को होरा फलित का ज्ञान प्राप्त कराना ताकि भ्रचक की बारह राशियों के गुण, लक्षण से परिचय कराना, ग्रहों के गुण आकृति के विषय में जानकारी प्राप्त कराना, ग्रहों की योग कारक स्थिति से परिचय कराना, व्यक्ति के जीवन में सूर्य और चन्द्रमा से बनने वाले राजयोग तथा पच्चंमहापुरूष राजयोग का ज्ञान तथा अरिष्ट के विषय में फलित का ज्ञान प्राप्त कराना है।

[B] Outcome

होरा ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- होरा शब्द के अर्थ का बोध, तथा राशियों का ज्ञान।
- ग्रहों के गुण लक्षणादि के आधार पर जन्मकुण्डली का विश्लेषण करना।
- ग्रहों की योग कारक स्थितियों से परिचय कराना।
- अनफा, सुनफा दुरूधरा, केमद्रुम और रूचक–भ्रद्रक, हंस, मालव्य एवं शशि महापुरूष के लक्षण एवं फल का ज्ञान।
- जन्मकुण्डली के द्वारा जातक के जीवन में अरिष्ट का विश्लेषण करना।
- होरा ज्योतिष परामर्श से आर्थिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति
- **[C] Contents: Unit wise Division**

Unit-I सारावली–होराशब्दार्थाध्याय तथा राशिभेदाध्याय

Unit-II सारावली–ग्रहगुणाध्याय

Unit-III सारावली–योगकारकाध्याय तथा कारकाध्याय

Unit-IV सारावली–चन्द्रयोगाध्याय, सूर्ययोगाध्याय तथा पंच्चमहापुरूषयोगाध्याय

Unit-V सारावली–अरिष्टाध्याय

[D] Readings

Books:

1. सारावली कल्याण वर्मा – हिन्दी व्याख्याकार– डॉ0 सुरेश चन्द्र मिश्र
2. सारावली कल्याण वर्मा – हिनदी व्याख्याकार –डा0 मुरलीधर चतुर्वेदी
3. Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri
4. बृहज्जातक–भट्टोत्पलटीका सहित वराहमिहिर–टीकाकरण – श्री केदारदत्त जोशी
5. बृहज्जातक– हिन्दी टीकाकरण– पं. सीताराम झा
6. Brihat Jatakam-Varahmihir English Translation by Prof. P.S. Shastri
7. बृहज्जातक– हिन्दी टीकाकरण–सुरेश चन्द्र मिश्र

SEMESTER: I
Core Courses
Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-104: Vastu Jyotish
(वास्तु ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

वास्तु ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को गृह निर्माण से प्राप्त होने सुख, समृद्धि तथा याान्ति से परिचय कराना, गृहराम्भ की विधि, दिशा तथा दशा का ज्ञान, भूमि के अन्दर स्थिति शल्य को निकालकर भूमि को शुद्ध करना, गृहराम्भ के मुहुर्त का ज्ञान प्राप्त कराना, वृष वास्तुचक, मण्डलेश फल द्वारा निर्णय द्वारवेध तथ द्वार स्थापना की प्रकिया से परिचय कराना है।

[B] Outcome

वास्तु ज्योतिष के पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- वृहदवास्तुमाला के अध्ययन के अनुरूप गृह निर्माण से पुरूषार्थ चटुष्टय की प्राप्ति।
- भूमिशोधन, शल्यानयन, दिक्साधन एवं पिण्डसाधन विधि का ज्ञान।
- आय का आनयन तथा गृहारम्भ के मुहूर्त हेतु मास–पक्ष–तिथि–नक्षत्र आदि का ज्ञान।
- गृहायुष्यादि विचार एवं गृहारम्भ योग का ज्ञान।
- वृष वास्तुचक, द्वारा स्थापना तथा पच्चंग्रह प्रमाण का ज्ञान।
- वास्तु सम्बन्धी परामर्श हेतु कौशल वृद्धि

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I बृहद्वास्तुमाला (गृहारम्भविधि, दिग्दिशाज्ञान, भूमि–संशोधन तथा लक्षण)

Unit-II बृहद्वास्तुमाला (शल्यानयन, दिक्साधन तथा पिण्डसाधन)

Unit-III बृहद्वास्तुमाला (आयानयन, आयाद्यनयन विचार ताकि गृहारम्भ में मासपक्षतिथिनक्षत्रादि विचार)

Unit-IV बृहद्वास्तुमाला (गृहारम्भ मुहूर्त्त, गृहायुष्यादिविचार, गृहारम्भ योग)

Unit-V बृहदवास्तुमाला वृषवास्तुचक मण्डलेश फल, द्वारानिर्णय, द्वारवेध द्वारस्थापना तथा पच्चंगृहप्रमाण

[D] Readings

Books:

1- बृहद्यवासतुमाला–श्री रामनिहोर द्विवेदी
2- वास्तुराज बल्लभ–मण्डनसूत्रधार हिन्दी टीकाकरण – श्री अनूप मिश्र
3- Mayamatam-English Translation by Bruno Dagens
4- मुहूर्त्त चिन्तामणि–(पीयूष धाराटीका) –श्री रामाचार्य हिन्दी टीकाकरण. केदारनाथ जोशी।

SEMESTER: I
Core Courses
Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-105: Brahmanda Tatha Khagola Vigyan

ब्रम्हाण्ड तथा खगोल विज्ञान

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

ब्रम्हाण्ड तथा खगोल विज्ञान के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ब्रहमाण्ड से परिचय कराना तथा उसकी उत्पत्ति एवं रचना से सम्बन्धित विभिन्न मतों से परिचय कराना है। ग्रह–उपग्रह, धूम–केतु, उल्का और आकाशगंगा के विषय में जानकारी देना, सूर्य–चन्द्र–मंगल–बुध–गुरू–शुक–शनि के आकार, प्रसप्त रंग, दूरी आदि का ज्ञान प्राप्त कराना हैं।

[B] Outcome

ब्रहमाण्ड तथा खगोल विज्ञान के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- ब्रहमाण्ड से परिचय सौरमण्डल की उत्पत्ति एवं ब्रहमाण्ड की रचना का ज्ञान प्राप्त होगा।
- ग्रह सूर्य–चन्द्र–मंगल–बुध–गुरू–शुक–शनि आदि के आकार, ताप, रंग एवं दूरी का ज्ञान।
- आकाश दर्शन एवं भचक में स्थित सत्ताईस नक्षत्रों के आकार का ज्ञान।
- इसके ज्ञान से आधुनिक वेधशाला में वेधशाला पर्ववेक्षक का कार्य कर सकते हैं।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I ब्रहमाण्ड एक परिचय, ब्रहमाण्ड रचना और विभिन्न मत ताकि सौरमण्डल की उत्पत्ति की परिकल्पना के सिद्धान्त।

Unit-II सौरमण्डल के विभिन्न सदस्यों का संक्षिप्त परिचय ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु, उल्का तथा आकाशगंगा।

Unit-III दूरी आदि के सन्दर्भ में ; बुध आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में; चन्द्रमा आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में ; मंगल–आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में; गुरू आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में तथा शनि–आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में तथा शनि–आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में

Unit-IV आकाश दर्शन आकाश में विभिन्न राशियों की उदय स्थिति और उनकी पहचान, राशियों के उदय होने के माह का ज्ञान, पूर्वी क्षितिज पर लग्नोदय का ज्ञान किस माह में कौन सी राशि उदित होती है।

Unit-V भचक का परिचय, 27 नक्षत्रों के भारतीय व ग्रीक अंग्रेजी नाम नक्षत्रों का राशियों से सम्बन्ध नक्षत्रों के तारों की संख्या व आकार

[D] Readings

Books:

1. बृहत्संहिता –आचार्य बराहमिहिर
2. आकाश–दर्शन–गुणकार मुले
3. ज्योतिषीय गणित एवं खगोलशास्त्र– विमल प्रसाद जैन
4. खगोल एवं गणित ज्योतिष – दीपक कपूर
5. भुवनकोशतत्वमीमांश – डॉ0 अनिल कुमार पोरवाल

SEMESTER: I
Value Added Courses (Credited)

Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)

JVVC-101: Panchanga Tatha Janmpatrika Nirmana Paddhati

(पंचांग तथा जन्मपत्रिका निर्माण पद्धति)

Maximum Marks 100 (70+30) Total Credit-04

[A] Objective

पचांग के अध्यापन का उद्देश्य विद्याथियों को संवतसर, अयन, गोल, ऋतु, संकान्ति, तिथि, वार, नक्षत्र, शेग तथा करण परिचय कराना है। जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति के अध्यापन का उद्देश्य अयनांश, लग्नसाधन, भावसाधन, विंशोत्तरी दशा साधन का ज्ञान कराना।

[B] Outcome

पचांग तथा जन्मपत्रिका निर्माण पाड्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा ।

- अयन, गोल, ऋतु, मास, पक्ष, तिथ, वार, नक्षत्र आदि का ज्ञान।
- सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान, रात्रिमान और मिश्रमान का ज्ञान ।
- अयनांश, लग्नसाधन, भावसाधन, भयात–भभोग आदि का ज्ञान ।
- जन्मपत्रिका निर्माण विधि का ज्ञानकर प्रतिष्ठापूर्वक धनागम कर सकते है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I पचांग में सम्वतसर, अयन, गोल, ऋतु, संकान्ति, चन्द्रमास तथा पक्ष परिचय

Unit-II तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण परिचय

Unit-III जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (मानक समय से सथानीय समय का ज्ञान, सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान रात्रिमान तथा मिश्रमान)

Unit-IV जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (इष्टकाल, अयनांश, सायनसूर्य, लग्नसाधन तथा दशम लग्नसाधन)

Unit-V जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (भावसाधन, ग्रहस्पष्टीकरण, भयात, भभोग तथा विंशोत्तरी दशा साधन)

[D] Readings

Books:

1. मानसागरी – टकाकार– प्रो0 रामचन्द्र पाण्डेय
2. भारतीय कुण्डली विमर्श डॉ0 गिरिजा शंकर शारूत्री
3. भारतीय कुण्डली विज्ञान–हिम्मत लाल मीठालाल ओझा
4. ज्योतिष सर्वस्व–डॉ0 सुरेश चन्द्र मिश्र

SECOND SEMESTER

SEMESTER: II
Core Courses
Semester II, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-201: Saiddhantik Jyotirvigyan
(सैद्धान्तिक ज्योतिर्विज्ञान)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

सैद्धान्तिक ज्योतिर्विज्ञान के अध्यापन का उद्देश्य विद्याथियों को र्लनसाधन, कदक्साधन, छायाकर्ण साधन,उद नतकाल आनयन, छाया से कालज्ञान, पर्वसम्भव का ज्ञान, चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण का ज्ञान कराना है।

[B] Outcome

सैद्धान्तिक ज्योतिर्विज्ञान पाठ्यकम के अध्ययन से विद्याथियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- लग्नसाधन, अक्षक्षेत्र, इष्टान्त्काहतिसाधन, नतकाल आनययन का ज्ञान।
- छाया ये काल ज्ञान, छायर्क साधन तथा कान्ति से पलभानयन का ज्ञान ।
- पर्वसम्भव ज्ञान, चन्द्र ब्रहण एवं सूर्यग्रहण से सम्बन्धित ज्ञान
- पर्वसम्भव ज्ञान, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण से सम्बन्धित ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (त्रिप्रश्नाधिकार–लग्नसाधन, दिक्साधन तथा अक्षक्षेत्र)

Unit-II सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (त्रिप्रश्नाधिकार–छायाकर्णसाधन,इष्टान्त्यकाहतिसाधन तथा नतकालानयन)

Unit-III सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (त्रिप्रश्नाधिकार–छाया से कालज्ञान, छायार्कसाधन तथा कान्ति से पलभानयन)

Unit-IV सिद्धान्त शिरोमणि–गणितध्याय पर्वसम्भवाधिकार तथा चन्द्रग्रहणाधिकार

Unit-V सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय सूर्यग्रहणाधिकार

[D] Readings

Books:

1. सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (भास्कराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार–पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी
2. सिद्धान्त शिरोमणि– (भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार – मुरलीधर इक्कुर
3. सिद्धान्त शिरोमणि– (भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार –प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
4. सिद्धान्त शिरोमणि– (भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार –पं. सत्यदेव शर्मा
5. सचित्र ज्योतिष शिक्षा (गणित खण्ड प्रथम) – बी0 एल0 ठाकुर
6. शिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय) – भास्कराचार्य–हिन्दी टीकाकार–केदार दत्त जोशी

SEMESTER: II
Core Courses
Semester II, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-202: Jataka Shastra
(जातक–शास्त्र)

Maximum Marks 100 (70+30)
[A] Objective

Total Credit-04

जातकशास्त्र के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को बृहज्जातक के अनुसार किसी जातक की आयु का निर्धारण करना, आजीविका के विषय में ज्ञान प्राप्त करना, किसी जातक की कुण्डली में राजयोग का ज्ञान प्राप्त कराना हैं।

[B] Outcome

जातक–शस्त्र पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- विभिन्न योनियों मे आयु का निर्धारण, आजीविका के निर्धारण का ज्ञान।
- कुण्डली में स्थित राजयोग और नाभस योग का ज्ञान।
- राशियों के स्वभाव का निरूपण एवं भावों का ज्ञान।
  जातक–शास्त्र के अध्ययन से परामर्श छ्वारा स्वरोजगार को गति दी जा सकती है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I बृहज्जातक–आयुर्दायाध्याय
Unit-II बृहज्जातक–कर्मजीवाध्याय
Unit-III बृहज्जातक–राजयोगा तथा नाभसयोगाध्याय
Unit-IV बृहज्जातक–भावाध्याय
Unit-V लघुजातक–राशिशीलनिरूपण

[D] Readings

Books:

1- बृहज्जातक–भटटोत्पलटीका सहित–वराहमिहिर–टीकाकार–श्री केदारदत्त जोशी
2- बृहज्जातक –हिन्दी पं. सीतारात झा
3- **Brihat Jatakam-Varahmihir English Translation by Prof. P.S. Shastri**
4- लघुजातक–पं. लखनलाल झा
5- सारावाली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार–डा0 सुरेशचन्द्र मिश्र
6- **Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri**
7- बृहज्जातक –हिन्दी टीकाकार–डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र

SEMESTER: II
Core Courses
Semester II, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-203: Muhurta Jyotish
(मुहूर्त्त ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) Total Credit-04

[A] Objective

मुहुर्त्त ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को मुहुर्त्त गणपति के अनुसार सम्वत्सर, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के अनुरूप मुहुर्त्त का निर्धारण तथा नामकरण मुहुतर्त, चूड़ाकर्म मुहूर्त्त, उपनयन मुहुर्त्त एवं विवाह मुहूर्त्त का ज्ञान प्राप्त कराना है।

[B] Outcome

मुहुर्त्त ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्याथियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- सम्वत्सर, तिथि, वार, नक्षत्र, करण तथा योग का ज्ञान।
- नामकरण,चूड़ाकर्म, उपनयन एवं विवाह मुहुर्त्त का ज्ञान।
- पच्चशलाका वेध का ान।
- समाज में प्रचलित षोडश संस्कार, अन्श शुभाशुभ इत्यादि कार्यों के मुहुर्त्त बताकर यश तथा अर्थ की प्राप्ति की जा सकती है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I मुहुर्त्त गणपति संवत्सरादि(प्रकरण, तिथि प्रकरण तथा वार प्रकरण)

Unit-II मुहुर्त्त गणपति संवत्सरादि (नक्षत्र प्रकरण, योग प्रकरण तथा करण प्रकरण)

Unit-III मुहुर्त्त चिन्तामणि (नामकरण मुहूर्त्त, चूडाकरण मुहूर्त्त तथा उपनयन मुहूर्त्त)

Unit-II मुहुर्त्त चिन्तामणि (विवाह प्रकरण प्रारम्भ से पच्चशलाकावेध से विवाह प्रकरणोपसंहार)

[D] Readings

Books:

1. मुहूर्त्त गणपति–हिन्दी टीकाकार–डॉ0 मुरलीधर चतुर्वेदी
2. मुहुर्त्त चिन्तामणि–श्री रामाचार्य (पीयूषधारा टीका सहित), हिन्दी व्याख्याकार–पं. केदारदत्त जोशी
3. मुहुर्त्त चिन्तामणि–श्रीरामाचार्यकृत, हिन्दी व्याख्याकार–डॉ0 रामचन्द्र पाण्डेय
4. मुहुर्त्त चिन्तामणि श्री रामाचार्य (पीयुषधारा टीका सहित), हिन्दी व्याख्याकार–पं. केदारदत्त जोषी
5. मुहुर्त्त मार्तण्ड–श्री नारायण दैवज्ञ, हिन्दी टीकाकार–पं. केदारदत्त जोशी
6. शीघ्रबोध–काशीनाथ–हिन्दी टीकाकार–डॉ0 बृजेश कुमार शुक्ल
7. ज्योतिर्विदाभरण–कालीदास–हिन्दी टीकाकार–डॉ0 रामचन्द्र पाण्डेय

SEMESTER: II
Core Courses
Semester II, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-204: Samudrik Shastra
(सामुद्रिक–शास्त्र)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

सामुद्रिक शास्त्र के अध्यापन का उछ्देश्य विद्यार्थियों को पुरूषों के अंग लक्षण के आधार पर उनके भाग्य का विचार करना, हाथ और उँगलियों का ज्ञान एवं हस्त रेखाओं का ज्ञान प्राप्त कराना।

[B] Outcome

सामुद्रिक शास्त्र पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- पुरूष तथा स्त्रियों के विभिन्न अंगों के आकार–प्रकार से भाग्य विश्लेषण का ज्ञान।
- हाथ और उँगलियों के आधार पर उनके स्वभाव का ज्ञान।
- हस्त रेखाओं और उनके चिन्हों की भाषा को समझने का ज्ञान।
- सामुद्रिक शास्त्र, ज्योतिषशास्त्र की सर्वाधिक प्रचलित विधि है जिसके माध्यम से अर्थोपार्जन किया जा सकता है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I	पुरूष अंग लक्षण विचार
Unit-II	स्त्री अंग लक्षण विचार
Unit-III	हस्त और उँगलियों के आकार
Unit-IV	हस्त रेखाओं का सचित्र विचार
Unit-V	हाथों में बने यवादि चिन्हों का ज्ञान

[D] Readings
Books:

1. रेखा रहस्य–गोपाल देव गौड़
2. सम्पूर्ण हस्तरेखा विज्ञान–कीरों
3. सचित्र सामुद्रिक रहस्य –शिवदत्त मिश्र
4. सामुद्रिक शास्त्र डा0 शुकदेव चतुर्वेदी
5. हस्त रेखा विज्ञा–गोपेश कुमार ओझा

SEMESTER: II
Core Courses
Semester I, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-205: Vedang Jyotish
(वेदांग ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

वेदांग ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय वागंमय से परिचय कराना है, वेद दुनिया के प्राचीनतम् ज्ञान अभिलेख है। ज्योतिष वेद के अंग के रूप में स्वीकृत है। इस पाठ्यकम का उद्देश्य विद्यार्थियों को वेदांग में उल्लेखित काल की विभिन्न इकाईयों नक्षत्रों की संज्ञा तथा वर्गीकरण और गर्भाधान की शुभ तिथियों का ज्ञान प्राप्त कराना है।

[B] Outcome

वेदांग ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- वेदांग ज्योतिष का परिचय युग, संवत्सर अयन, ऋतु और मास का ज्ञान।
- वेदांग ज्योतिष में उल्लखित पर्व, विषुवत, नक्षत्र, अधिमास आदि का ज्ञान।
- नक्षत्रों को तारा के आधार पर मुहूर्त्त निर्धारण का ज्ञान ।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I वेदांग ज्योतिष का सामान्य परिचय तथा रचनाकाल

Unit-II वेदांग ज्योतिष में युग, संवत्सर, अयन, अयन, ऋतु और मास का ज्ञान।

Unit-III वेदांग ज्योतिष में पक्ष, तिथि, पर्व, विषुवत, नक्षत्र, अधिमास

Unit-IV आथर्वण ज्योतिष–नक्षत्रों की संज्ञा तथा वर्गीकरण, नक्षत्र–गणानुसार फल निरूपण तथा – पीडन

Unit-V आथर्वण ज्योतिष–रजस्वला–नियम–विधान, गर्भाधान सम्बन्धी तिथियाँ तथा गर्भाधान विषयक कुढ अन्य विषय

[D] Readings

Books:

1. भारतीय ज्योतिष–पं. शंकर बाल कृष्ण दीक्षित
2. संस्कृत–वांमय का वृहद इतिहास (द्ववतीय वेदांग खण्ड) सम्पादक प्रो0 ओम प्रकाश पाण्डेय
3. वैदिक ज्योतिष डा0 गिरिजा शंकर शास्त्री
4. वेदांग ज्योतिष–शिवराज आचार्य
5. वेदांग ज्योतिष–डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र
6. शिष्यधीवृद्धिदम् – श्री लल्लाचार्य
7. आथर्वण–ज्योतिषम्–डा0 प्रयाग नारायण मिश्र
8. अथर्ववेदीयज्योतिषम्–महर्षि कात्यायन

SEMESTER: II
Core Courses
Semester II, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-206: Practical and Viva-Voce
(भारतीय वेधशाला तथा प्रयोग)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04 [A] Objective**

भारतीय वेधशाला तथा प्रयोग के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्योतिष के प्राचीन वेध यन्त्रों के आधार पर ग्रह गणना का विश्लेषण करना, दिक्–देश और काल का साधन करना तथा व्यवहारिक ज्ञान के लिये वेधशाला के यन्त्रों का ज्ञान और उनके अनुरूप ग्रह गणना का वेध करने की विधि के बारें में जानकारी प्राप्त कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

[B] Outcome

भारतीय वेधशाला तथा प्रयोग पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- प्राचीन व नवीन वेधशालाओं का ज्ञान।
- दिक्–देश और काल का ज्ञान।
- भारतीय वेधशाला के ज्योतिवैज्ञानिक यन्त्रों के व्यवहारिक पक्ष को जानकर वेधशाला के यान्त्रिक पर्यवेक्षण का कार्य किया जा सकता है।
- शड़कु यन्त्र और यामोत्तरतुरीयभित्तीय यन्त्र से पलभा, अक्षांध इत्यादि का वेध।
- अक्षांश, कान्ति, नतांश–उन्नतांश साधन और अक्षांश से पलभा साधन की गणितीय विधि।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I प्राचीन व नवीन वेधशालाओं का वर्णन

Unit-II महामहोपाध्याय पं. कल्याण दत्त शर्मा वेधशाला, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ में निर्मित यन्त्रों का परिचय

Unit-III शंड़कु यन्त्र तथा यामोत्तरतुरीयभित्तीय यन्त्र और उनकी प्रयोग विधि।

Unit-IV सम्राट–पलभा यन्त्र तथा प्रयोग विधि।

Unit-IV अक्षांश, कान्ति, नतांश–उन्नतांश साधन और अक्षाश से पलभासाधन।

[D] Readings

Books:

1. ज्योर्तिविान की वेधशाला– पं. कल्याण दत्त शर्मा
2. ज्योतिर्विज्ञान सन्दर्भसमालोचनिका–प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
3. यन्त्रमन्दिर–प्रो0 विनोद कुमार शर्मा
4. ज्योतिष की वेधशालायें–प्रो0 विनोद शास्त्री
5. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–मुरलीध ठक्कुर
6. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
7. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–पं. सत्यदेव शर्मा
8. सिद्धान्तशिरोमणि–(गणिताध्याय)–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–केदार दत्त जोशी
9. ग्रहलाघवम् गणेशदैवज्ञ–हिन्दी टीकाकार–श्री केदारदत्त जोशी
10. ग्रहलाघवम् गणेशदैवज्ञ–हिन्छभ् अनुवादक–डा0 ब्रहामानन्द त्रिपाठी

SEMESTER: II
Value Added Courses (Non-Credited)
Semester II, M.A. (Jyotirvigyan)
JVVNC-201: Grahopchar Paddhati
(ग्रहोपचार पद्धति)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-00**

[A] Program Outcome

ग्रहोचपार पद्धति के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को मन्त्र, मणि (रत्न) औषधि तथा यन्त्र के माध्यम से ग्रहोचपार की विधि का ज्ञान कराना है तथा अरूण संहिता लाल किताब के आधार पर जन्मपत्री में उपस्थित अरिष्ट निवारण का ज्ञान कराना।

[B] Program Specific Outcome

ग्रहोपचार पद्धति पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- मन्त्रोपचार तथा मणि (रत्न) उपचार का ज्ञान।
- मन्त्रोपचार विधि एवं औषधि उपचार प्रयोग का ज्ञान
- लाल किताब के आधार पर ग्रहों का उपचार।
- रत्नों, नक्षत्र–वृक्षों तथा औद्याधियों के विषय में समुचित ज्ञान करके इससे समबन्धित व्यवसाय को किया जा सकता है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-II मणि (रत्न) उपचार
Unit-III मन्त्रोपचार विधि
Unit-IV यन्त्रोंपचार विधि
Unit-V लाल कितार के आधार पर ग्रहों का उपचार

[D] Readings

Books:

1- कर्म कौमदी–प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
2- नवग्रह–रहस्य–अशोक कुमार गौड़
3- मुहूर्तचिन्तामणि–डा0 सुरेध चन्द्र मिश्र
4- भारतीयज्योतिष लाल किताब के अनुपम उपाध–रामेश्वर चन्द्र शास्त्री
5- रत्न प्रदीप–गौरी शंकर कपूर

THIRD SEMESTER

SEMESTER: III
Core Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-301: Siddhant Jyotish
(सिद्धान्त ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

सिद्धान्त ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रहों के उदय–अस्त का ज्ञान प्राप्त कराना, चन्द्रमा की श्रृगांन्नति का अध्ययन कराना, ग्रहयुति और भग्रहयुति का ज्ञान प्राप्त कराना।

[B] Outcome

सिद्धान्त ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को ग्रहों के उदय–अस्त का ज्ञान प्राप्त कराना, चन्द्रमा की श्रृगोंन्नति का अध्ययन कराना, ग्रहयुति और भग्रहयुति का ज्ञान प्राप्त होग।

- ग्रहों के उदायस्त एवं श्रृगोन्नति का ज्ञान।
- ग्रहयुति एवं भग्रहयुति का ज्ञान ।
- वैधृति एवं व्यतीपात योगों का ज्ञान।
- ये विषय पचांग निर्माण प्रकिया को और अधिक पुष्ट करता है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (ग्रहोदयास्ताधिकार)
Unit-II सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (श्रृगोन्नत्याधिकार)
Unit-III सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (भग्रहयुत्याधिकार)
Unit-IV सिद्धान्त शिरोमणि–गणिताध्याय (पाताधिकार)

[D] Readings

Books:

1- सिद्धान्त शिरोमणि (वासनाभाष्य) भास्कराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार–पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी
2- सिद्धान्तशिरोमणि मरीचिटीकासहित भास्कराचार्य, व्याख्याकार–पं.केदारदत्त जोशी
3- सिद्धांत शिरोमणि–भास्कराचार्य–संपादक–डॉ0 मुरलीधर ठक्कुर
4- सिद्धांत शिरोमणि–भास्कराचार्य, हिंदी टीकाकार–प्रो0 ब्रजेश कुमार शुक्ल
5- सिद्धांत शिरोमणि–भास्कराचार्य, हिंदी की टीकाकार पंडित सत्यदेव शर्मा
6- सरल त्रिकोणमिति–बापूदेव शास्त्री संपादक पंडित गोविंद देव पाठक
7- चापीय त्रिकोणमिति–बापू देव शास्त्री
8- चापीय त्रिकोणमिति–
9- नीलांबर झा

SEMESTER: III
Core Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-302: Karana Jyotish
(करण ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

करण ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को चंद्र ग्रहण तथा सूर्य ग्रहण के स्पर्श, मध्य और मोक्ष का ज्ञान प्राप्त कराना, ग्रहों के उदयास्त का समय निर्धारण कराना तथा चंद्रमा की श्रृंगोन्नति का आनयन कराना।

करण ज्योतिष पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- चंद्रग्रहण एवं सूर्य के समय का निर्धारण का ज्ञान।
- ग्रहों के उदय–अस्त और चंद्रमा की श्रृगोन्नति के स्वरूप का ज्ञान।
- वैधृति और व्यतिपात के समय निर्धारण का ज्ञान।

Unit-I ग्रहलाघव (चन्द्रग्रहणाधिकार)
Unit-II ग्रहलाघव (सूर्यग्रहणाधिकार)
Unit-III ग्रहलाघव (उदयास्ताधिकार)
Unit-IV ग्रहलाघव (श्रृंगोन्नत्यधिकारधिकार)
Unit-V ग्रहलाघव (पाताधिकार)

(D) Readings

Books :

1- ग्रहलाघव गणेश दैवज्ञ–हिन्दी अनुवादक–पं. केदारदत्त जोशी
2- ग्रहलाघव गणेश दैवज्ञ–हिन्दी अनुवादक–डॉ0 ब्रहमनन्द त्रिपाठी
3- ग्रहलाघव (मल्लारि तथा विश्वनाथ की टीकाओं सहित) गणेश दैवज्ञ–सम्पादक डॉ0 सुधाकर द्विवेदी
4- ग्रहलाघव गणेश दैवज्ञ–हिन्दी टीकाकार–डज्ञ0 रामचन्द्र पाण्डेय
5- सचित्र ज्योतिष शिक्षा–द्वितीय खण्ड (गणित) बी0 एल0 ठाकुर

SEMESTER: III
Elective Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-301 (A): Parashar Jyotish
(पराशर ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

पाराशर ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विषाथियों को केन्द्र त्रिकोणादि भावों की संज्ञा से परिचय कराना और उसके फल का निर्धारण करना, भावेश के केन्द्र–त्रिकोण के अन्तर सम्बन्धों से बनने वाले राजयोग, द्वितीययेश और सप्तमेश से होने वाले मारकेश के फलित का ज्ञान कराना।

(B) Outcome

पाराशार ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निमन विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- भावेशों की संज्ञा के निर्धारण का ज्ञान
- भावेशों केफल निर्धारण एवं राजयोग का ज्ञान
- होरा ज्योजिष की सर्वाधिक प्रचलित विधि है जिसके माध्यम से तर्कपूर्वक सम्बन्धित कार्य किया जा सकता है।
-

(C) contents: Unit wise division

Unit I लघुपाराशरी–संज्ञा अध्याय
Unit II लघुपाराशरी–फलनिर्णयाध्याय
Unit III लघुपाराशरी–राजयोगफलाध्याय
Unit IV लघुपाराशरी–मारकाध्याय
Unit V लघुपाराशरी–दशफलाध्याय

(D) Readins

Books:

1- लघुपाराशरी–डा0 सुरेशचन्द्र मिश्र
2- लघुपाराशरी– सिद्धान्त – मेजर एस0 जी0 खोत
3- लघुपाराशरी–प. कामेश्वर उपाध्याय
4- लघुपाराशरी–मध्य पाराशरी–पं. केदारदत्त जोशी
5- लघुपाराशरी–डा0 मदनमोहन पाठक

SEMESTER: III
Elective Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-301 (B): Jaimini Jyotish
(जैमिनी ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit_04**

[A] Objective

जैमिनी ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को जैमिनी सूत्र में उल्लिखित संज्ञाओं से परिचय कराना, कारकांश, पद–उपपद का फलादेश करना, आयु का विचार करना और दसके अपवादों से परिचय का ज्ञान कराना।

(B) Outline

जैमिनी ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा ।

- जैमिनी सूत्र में उल्लिखित जयोतिषीय संज्ञाओं का ज्ञान।
- जैमिनी सूत्र के अनुसार कारकांश, पद–उपपद के फलादेश का ज्ञान।
- जैमिनी सूत्र के अनुसार जातक की आयु का ज्ञान ।

(D) Readings

Books:

1. जैमिनीसूत्रम्–श्री अच्युतानन्द झा
2. जैमिनीसूत्रम्–श्री सीताराम शर्मा
3. जैमिनीसूत्रम्–श्री डा0 सुरेशचन्द्र मिश्र
4. जैमिनीसूत्रम्–आचार्य श्री कमलाकान्त शर्मा
5. जैमिनी ज्योतिष का अध्ययन डा0 बी0 वी0 रमन

SEMESTER: III
Elective Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-301 (C): Tajik Jyotish
(ताजिक ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

ताजिक ज्योतिष के अध्शपन का उद्देश्य विद्यार्थियों को ताजिक नीलकण्ठी में प्रयुक्त हुये संज्ञातन्त्र, ग्रहाध्याय, सोलह योगो से परिचय कराना, सहम का ज्ञान कराना, वर्षकुण्उली एवं मुन्थहा का ज्ञान कराना।

(B)Outcome

ताजिक ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।
ताजिक के अनुसार ग्रहों का परिचय और सोलह योगों का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I ताजिकनीलकण्ठी, संज्ञातन्त्र (ग्रहाध्याय)
Unit-II ताजिकनीलकण्ठी, संज्ञातन्त्र (षोडशयोगाध्याय)
Unit-III ताजिकनीलकण्ठी, संज्ञातन्त्र (सहमाध्याय)
Unit-IV ताजिकनीलकण्ठी, वर्षतन्त्र (वर्षफलाध्याय)
Unit-V ताजिकनीलकण्ठी, वर्षतन्त्र (मुन्थहा–ध्याय)

[D] Readings

Books:

1. ताजिकनीलकण्ठी–नीलकण्ठाचार्य–हिन्दी टीकाकार–पं. केदादत्त जोशी
2. ताजिकनीलकण्ठी–नीलकण्ठाचार्य–हिन्दी अनुवादक – श्री वासुदेव गुप्त
3. ज्योतिष पीयुष–डा0 कल्याणदत्त शर्मा
4. ताजिक–भूषणम्–गणेश दैवज्ञ–हिन्दी अनुवादक –पं. सीताराम शास्त्री

SEMESTER: III
Elective Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-302 (A): Krishnamurti Jyotish Paddhati
(कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति के अध्यापन का उद्देय विद्यार्थियों को प्राचीन ज्योतिष को आधुनिक तरीके से प्रस्तुत करना, जन्मपत्रिका के भाव एवं ग्रहों के अंश का निर्धारण नक्षत्र स्वामी–उपस्वामी के आधार पर फलित विश्लेषण का ज्ञान कराना।

[B] Outcome

कृष्णमूर्ति ज्योतिष के पद्धति पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- ज्योतिष आधुनिकतम विधा का ज्ञान।
- जन्मपत्रिका निर्माण कारकेश का निर्धारण एवं उपस्वामी का ज्ञान।
- प्रश्न ज्योतिष का परम्परागत एवं आधुनिक ज्ञान।
- इस पद्धति के द्वारा प्रश्न के माध्यम से सटीक विश्लेषण द्वारा समाज में लोगों को सही दिशा निर्देशित कर स्व–रोजगार के साथ यश की प्राप्ति की जा सकती है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I कृष्णमूर्ति ज्योतिष का सामान्य परिचय
Unit-II कृष्णमूर्ति के अनुसार जन्मपत्रिका निर्माण
Unit-III नक्षत्र–राशि विभाजन, स्वामी, उपस्वामी तथा उपस्वामी का सिद्धान्त
Unit-IV कृष्णमूर्ति के अनुसार कारकांश विश्लेषण
Unit-V कृष्णमूर्ति पद्धति में प्रश्न ज्योतिष

[D] Readings

Books:

1- Reader I - Casting the Horoscope by Prof K.S. krishnamurti
2- Reader II - Fundamental Principles of Astrology by Prof K.S. krishnamurti
3- Reader III - Predictive Stellar astrology by Prof K.S. krishnamurti
4- Reader IV - Marriage, Married Life & Children by Prof K.S. krishnamurti
5- Reader V - Transits by Prof K.S. krishnamurti
6- Reader VI - Horary Astrology by Prof K.S. krishnamurti
7. कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति पर आधारित फलित ज्यातिष रहस्य – यशवंत देसाई
8. कृष्णमूर्ति ज्योतिष रहस्य–सुरेश शहासने

SEMESTER: III
Elective Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-302 (B): Sanhita (Medini) Jyotish
संहिता (मेदिनी) ज्योतिष

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

संहिता (मेदिनी) ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य, विद्यार्थियों को ज्योतिर्विद के आचार–व्यवहार एवं लक्षण से परिचय कराना, सूर्य की गति के प्रभाव का अध्ययन कराना, तथा पृथ्वी के विभिन्न भागों पर ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन कराना।

[B] Outcome

हिता (मेदिनी) ज्योतिष पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- ज्योतिर्विद आचार संहिता का ज्ञान।
- आदित्यचार एवं कूर्मविभागाध्याय का ज्ञान।
- ग्रहयुद्ध एवं पुष्प स्नान के फल का ज्ञान।
- संहिता ज्योतिष के माध्यम से पृथ्वी तथा देश में होने वाली घटनाओं–दुर्घटनाओं का अवलोकन कर राष्ट्र–हित में कार्य कर सकते है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I बृहत्संहिता – सावंत्सरसूत्राध्याय
Unit-II बृहत्संहिता – आदित्यचाराध्याय
Unit-III बृहत्संहिता – कूर्मविभागाध्याय
Unit-IV बृहत्संहिता – ग्रहायुद्धाध्याय
Unit-V बृहत्संहिता – पुष्यस्नानाध्याय

[D] Readings

Books:

1- बृहत्संहिता – आचार्य बराहमिहिरकृत–पं. अच्युतानन्द झा
2- बृहत्संहिता – आचार्य बराहमिहिरकृत–डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र
3- भद्रबाहु संहता–भद्रबाहु, हिन्दी टीकाकार –नेमिचन्द्र शास्त्री
4- संवत्सर संहिता–डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र
5- मेदिनीय ज्योतिष–डा0 जगदम्बा प्रसाद गौड़
6- मेदिनी ज्योतिष–श्री के0 एन0 राव

SEMESTER: III
Elective Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-302 (C): Moocs Courses
(मूक कोर्स)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

A massive open online course (MOOC) is a free Web-based distance learning program that is designed for the participation of large numbers of geographically dispersed students. A MOOC may be patterned on a college or university course or may be less structured. Although MOOCs don't always offer academic credits, they provide education that may enable certification, employment or further studies.
Portal for Moocs Course- http://ugcmoocs.inflibnet.ac.in/ugcmoocs/
Certificate must be required to join credit of Moocs in total credits of course.

SEMESTER: III
Internship Courses
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVIN-301: Summer Internship
(ग्रीष्मावकाश इंटर्नशिप)

Maximum Marks 100 **Total Credit -04**

At the end of second Semester, each student shall undertake Summer Internship in respective organztaionas during summer vacations. It is mandatory for the students to seek written approaval from the Faculty Guide about the Topic and the organzaition before commencing the summer Intership.
During summer Intership students are expected to take necessary guidance from the faculty guide allotted by the Institute. To be it effectively they should be in touch with their guide through email or phone.
After completing Summer Internship, Student must be submitting their Summer Internship Report in the Department during third semester.

SEMESTER: III
Interdepartmental Course
Semester III, M.A. (Jyotirvigyan)
JVIER-301: Computer tatha Jyotish
(कम्प्यूटर तथा ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Program Outcome

कम्प्यूटर आधुनिक समाज में साक्षरता और शिक्षा का प्रमुख आधार बन चुका है। ज्योतिष में भी कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर अपनी भूमिका निभा रहा है। कम्प्यूटर तथा ज्योतिष पाठ्यकम का उद्देश्य विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से सुयोग बनाना है।

[B] Program Specific Outcome

कम्प्यूटर तथा ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- कम्प्यूटर का सामान्य परिचय तथा साफ्टवेयर का ज्ञान।
- साफ्टवेयर से कुण्डली गुण मिलान का ज्ञान।
- साफ्टवेयर से कुण्डली निर्माण विधि का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I कम्प्यूटर का सामान्य परिचय
Unit-II ज्योतिष के विभिन्न साफ्टवेयरों का वर्णन
Unit-II साफ्टवेयर की शुद्धता परीक्षण का ज्ञान

Unit-IV साफ्टवेयर से कुण्डली निर्माण विधि
Unit-V साफ्टवेयर से गुण मेलापक

[D] Readings
Books:

1 कम्प्यूटर सामान्य ज्ञान–जेबीसी प्रेस संपादक मण्डल
2- Astro office 2018
3- Parashar Light 7.01
4- Future point
5- Astrosage mobile software
7- Hindu Calendar offline software

FOURTH SEMESTER

SEMESTER: IV
Core Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVCC-401: Gola-Jyotirganita
(गोल–ज्योतिर्गणित)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

गोल–ज्योतिर्गणित के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को पृथ्वी के भौगोलिक स्वरूप, ब्रहमाण्ड में ग्रहों की गति का अध्श्न तथा ग्रहों की चाल समझने के लिये गोल यनत्र बनाने की विधि से परिचय कराना।

[B] Outcome

गोल–ज्योतिर्गणित पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- प्रथ्वी आदि चतुर्दश भुवनों का ज्ञान।
- मध्यम गति और गोलबन्ध का ज्ञान।
- ग्रहण के स्पर्श, मध्य और मोक्ष के समय निर्धारण का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय (भुवनकोश)
Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय (मध्यगतिवासना)
Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय (गोलबन्धाधिकार)
Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय (त्रिप्रश्नवासना)
Unit-I सिद्धान्त शिरोमणि–गोलाध्याय (ग्रहणवासना)

[D] Readings

Books:

1- सिद्धान्त शिरोमणि–(गोलाध्याय) – भास्कराचार्य, सम्पादक–मुरलीधर चतुर्वेदी
2- गोलाध्याय–भास्कराचार्य, हिनदी टीकाकार–पं. केदारदत्त जोशी
3- सिद्धान्त शिरोमणि–(गोलाध्याय) – भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–पं. सत्यदेव शर्मा
4- गोलाध्याय–भास्कराचार्य, हिनदी टीकाकार–पं. गिरिजा प्रसाद द्विवेदी
5- ग्रहगति का कमिक विकास–श्री चन्द्र पाण्डेय

SEMESTER: IV
Elective Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-401 (A): Gochar Tatha Ashtakvarga
(गोचर तथा अष्टकवर्ग)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Program Outcome

गोचर तथा अष्टकवर्ग के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को जन्मकुण्डली फलित ज्ञान के लिये ग्रह–गोचर सिद्धान्त का ज्ञान कराना, भिन्नाष्टक तथा समुदाय अष्टकवर्ग से आयु एवं अरिष्ट का ज्ञान कराना। अष्टकवर्ग से भाग्य, धन, वाहन एवं राजयोग आदि का ज्ञान कराना।

[B] Program Specific Outcome

गोचर तथा अष्टकवर्ग पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा ।

- ग्रह–गोचर सिद्धान्त फल का ज्ञान।
- भिन्नाष्टक, त्रिकोणशोधन तथा एकाधिपत्य शोधन का ज्ञान।
- आयु एवं अरिष्ट का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I ग्रह–गोचर सिद्धान्त तथा फल
Unit-II अष्टकवर्ग का परिचय
Unit-III भिन्नाष्टक वर्ग तथा समुदाय अष्टकवर्ग
Unit-IV अष्टकवर्गफल, त्रिकोणशोधन तथा एकाधिपत्य शोधन
Unit-IV आयुर्दाय एवं अरिष्ट अष्टकवर्ग

[D] Readings

Books:

1- फलदीपिका–मन्त्रेश्वर, हिन्दी टीकाकार–पं. गोपेश कुमार ओझा
2- **Phaldipika (Mantreshwara) with English Translation, Notes Commentory by Dr. G.S. Kapoor**
3- अष्टकवर्ग महानिबन्ध–आचार्य मुकुन्छ दैवज्ञ 'पर्वतीय'
4- अष्टकवर्ग (सिद्धान्त का प्रयोग) –के0 एन0 राव
5- अष्टकवर्ग भग्य बिन्दु–विनय आदित्य
6- अष्टकवर्ग फलित की आधुनिकता विधियाँ–एम0एस0 मेहता
7- सारावली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार7 डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र
8- सारावली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार7 डा0 मुरलीधर चतुर्वेदी
9- **Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri**
10-लघु जातक–पं. लखनलाल झा

SEMESTER: IV
Elective Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-401 (B): Prashna Jyotish
(प्रश्न ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

प्रश्न ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों में जन्मकुझली के अभाव में प्रश्न से फलित का ज्ञान कराने की विधि से परिचय कराना, प्रश्न ज्योतिष में शुभ–अशुभ का विचार करना, प्रवासी व्यक्ति के विषय के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

[B] Outcome

प्रश्न ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- होरा एवं शुभ–अशुभ का ज्ञान।
- प्रवासी व्यक्ति के विषय में ज्ञान।
- नष्ट वस्तु एवं अन्य विविध विषयों का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I षट्पंचाशिका – होराध्याय
Unit-II षट्पंचाशिका – शुभाशुभाध्याय
Unit-III षट्पंचाशिका – प्रवास चिन्ताध्याय
Unit-IV षट्पंचाशिका – नष्टप्राप्त्यध्याय
Unit-V षट्पंचाशिका – मिश्रध्याय

[D] Readings

Books:

1- षट्पंचाशिका –डा0 सुरेशचन्द्र मिश्र
2- प्रश्नशिरोमणि–पं. भवानी खण्डेलवाल
3- प्रश्न शास्त्र–दीपक कपूर
4- षट्पंचाशिका –श्री दीनानाथ झा

SEMESTER: IV
Elective Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-401(C): Dasha-Phal Niranaya
(दशा-फल निर्णय)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

दशा–फल निर्णय के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों में जातक की ग्रह–दशाओं की गणना करना तथा दशा–अन्तर्दशा के आधार पर फलित का विश्लेषण एवं ग्रहों की अवस्थाओं से परिचय कराना।

[B] Outcome

दशा– फल निर्णय पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- कुण्डली के अनुसार अनेक प्रकार की दशाओं का अध्ययन का ज्ञान।
- दशा साधन विणि और उसके फल के आनयन का ज्ञान।
- ग्रहों की अवस्थाओं का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I दशा प्रयोजन तथा दशाभेद
Unit-II दशा साधन विधि
Unit-III दशा फल आनयन
Unit-IV ग्रह–अवस्था दशा विवके
Unit-V अन्तर्दशाफल

[D] Readings

Books:

1- दशाफलदर्पण–डा0 हरिशंकर पाठक
2- दशाफलदर्पण–डा0 सुरेश चन्द्र मिश्र
3- योगिनी दशा से फलित–वी0पी0 गोयल
4- जैमिनी चर दशा से भविष्यवाणी–के0 एन0 राव
5- फलदीपिका–मन्त्रेध्वर, गोपेश कुमार ओझा

SEMESTER: IV
Elective Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL -402(A): Ank Jyotish
(अंक ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objectiv

अंक ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को अंकशास्त्र से परिचय कराना, मूनांक एवं भाध्यांक का निर्धारण कराना। नामाक्षार प्रयोग विधि एवं अंको के आधार पर रंग रत्नों का निर्धारण करना।

[B] Outcome

अंक ज्योतिष पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- अंकशास्त्र का ज्ञान
- मूलांक एवं भाग्यांक निर्धारण तथा प्रयोग का ज्ञान।
- अंको के आधार पर रंगों एवं रत्नों का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I	अंक शास्त्र का परिचय
Unit-II	मूलांक निर्धारण तथा प्रयोग
Unit-III	भाग्यांक निर्धारण तथा प्रयोग
Unit-IV	नामाक्षार प्रयोग विधि
Unit-V	अंको का रंगों तथा रत्नों से सम्बन्ध

[D] Readings

Books:

1- अंक ज्योतिष – आचार्य बदरीनारायण
2- .अंक विद्या पं. गोपेश कुमार ओझा
3- अंको में छिपा रहस्य–सेफेरियल
4- अंक ज्योतिष विज्ञान एवं भविष्यफल–अरूण सागर ''आनंद''

SEMESTER: IV
Elective Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-402 (B): Nadi Jyotish
(नाड़ी ज्योतिष)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

नाड़ी ज्योतिष के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों को नाड़ी ज्योतिष से परिचय कराना, देवकेरलम् नाड़ी और भृगु नाड़ी संहिता का बोध कराना तथा रावण संहिता एवं चन्द्रकला नाड़ी के आधार पर जन्मकुण्डली का विश्लेषण कराना।

[B] Outcome

नाड़ी ज्योतिष पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- नाड़ी ज्योतिषउद का ज्ञान।
- देवकेरलम् नाड़ी एवं भृगु संहिता का ज्ञान।
- रावण संहिता तथा देवकेरलम् का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I	नाड़ी ज्योतिष का परिचय
Unit-II	देवकेरलम् नाड़ी
Unit-I	भृगु–नाड़ी संहिता
Unit-I	रावण संहिता
Unit-I	चन्द्रकला नाड़ी

:D] Readings

Books :

1- देवकेरलम् ले0 कर्नल राज कुमार
2- नाड़ी ज्योतिष–एस0 बी0 आर0 मिश्र
3- नाड़ी ज्योतिष–उमंग तनेजा
4- चन्द्रकला नाड़ी–जगन्नाथ भसीन
5- भृगु संहिता–आचार्ई बराहमिहिर
6- रावण संहिता–पं. किशन लाल शर्मा
7- Nadi Astrology-Chandu Lal S Patel
8- 8. Bhrigu Nandi Nadi-R.G.Rao

SEMESTER: IV
Elective Courses
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVEL-402 (C): Sasya Tatha Vrishti Vigyan
(सस्य तथा वृष्टि विज्ञान)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

सस्य तथा वृष्टि विज्ञान के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों में कृषि महत्व और सम्वत्सर के राजा के निर्धारण की विधि तथा आषाढ़ आदि मासों में वृष्टि विचार, मेघेश के अनुसार वृष्टि विचार तथा भड्डरी के मत से जल वृष्टि का पूर्व ज्ञान प्राप्त कराना है।

[B] Outcome

सस्य तथा वृष्टि विज्ञान के अध्ययन से विद्याथियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- कृषि महत्व एवं राजा के आनयन विचार का ज्ञान।
- आषाढ़ आदि मासों में वृष्टि विचार का ज्ञान।
- घाघ–भड्डरी के मत से वृष्टि विचार का ज्ञान।
- सस्य तथा वृष्टि विज्ञान के माध्यम से वर्षा इत्यादि का पूर्वानुमान कर सरकार को भविष्य की नीतियों के निर्धारण में सहायक (Helping the government in determining future policies) हो सकते है।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I कृषि महत्व एवं राजा का आनयन विचार
Unit-II सस्येश के अनुसार सस्य चिवार
Unit-III आषाढ़ आदि मासों में वृष्टि विचार
Unit-IV मेघेश के अनुसार जल वृष्टि विचार
Unit-V सस्य एवं वृष्टि विचार में घाघ–भड्डरी के मत्

[D] Readings

Books:

1. प्राच्यभारतीयम् ऋतुविज्ञानम्–डा0 धुनीराम त्रिपाठी
2. कृषि पाराशार–श्रभ द्वारिका प्रसाद शास्त्री
3. कृषि पाराशार–रामचन्द्र पाण्डेय
4. घाघ–भड्डरी की कहावतें–पं. रामलखन पाण्डेय
5. घाघ–भड्डरी–डा0 रामनरेश त्रिपाठी
6. भारतीय ज्योतिष और मौसम विज्ञान–आचार्य भास्करानन्द लोहानी
7. आधुनिक सस्य विज्ञान – रामऔतार पोरवाल

SEMESTER: IV
Master Thesis
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVMT-401: Project Work/ Dissertation
(पSरयोजना काय_/लघुशोध !ब&ध)

Maximum Marks 200 **Total Credit-08**

[A] Objective

लघुशोध प्रबन्ध/परियोजना कार्य के अध्यापन का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं अनुसंधान के प्रति अभिरूचि विकसित करना। इससे विद्यार्थियों सामान्य से विशिष्ट अध्ययन की प्रवृत्ति का विकास होगा । शास्त्रीय ज्ञान के साथ आधुनिकता और नवीनता के प्रति विद्यार्थियों में जिज्ञासा का विकास करना।

[B] Outcome

लघुशोध प्रबन्ध/परियोजना कार्य पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- इससे विद्यार्थियों में शोध एवं अनुसंधान की प्रवृत्ति विकसित होगी।
- परिवर्तनशील युग के साथ विद्यार्थियों में नये विषयों के प्रति अथिरूचि बढ़ेगी।
- विद्यार्थियों में सामान्य से विशिष्ट अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित होगी।

[C] Contents:

लघुशोध प्रबन्ध/परियोजना कार्य के अन्तर्गत छात्र तथा छात्राये ज्योतिषशास्त्र के त्रिस्कन्ध–सिद्धान्त, संहिता तथा होराशास्त्र के किसी शोध विषय को केन्द्रित करते हुये ज्योतिष के उपविषयों का तथा अन्य सन्दर्भित विषयों के साथ उनके वैज्ञानिक पक्षों को ससन्दर्भ प्रस्तुत करेंगें। इसके साथ ही साथ, छात्र तथा छात्राये शोध विषय के सामाजिक तथा व्यवहारिक पक्षों का प्रायोगिक वर्णन भी शास्त्र में, उल्लिखित सिद्धान्तों के आधार पर करेंगे ।

SEMESTER: IV
Intradepartmental Course
Semester IV, M.A. (Jyotirvigyan)
JVIRA-401: Samanya Karmakand Paddhati
(सामान्य कर्मकाण्ड पद्धति)

Maximum Marks 100 (70+30) **Total Credit-04**

[A] Objective

मानव जीवन का उद्देश्य पुरूषार्थ चतुष्टयः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हैं। धर्म पुरूषार्थ का सर्वाधिक पद्वा कर्मकाण्ड है। कर्मकाण्ड के अन्तर्गत नित्य एवं नैमित्तक पूजा कर्म अनुष्ठान, विवाह आदि संस्कार एवं गृहारम्भ और गृह प्रवेश की पूजा विधि का विद्यार्थियों का ज्ञान प्राप्त करना, इस पाठ्यकम का उद्देश्य हैं।

[B] Outcome

सामान्य कर्मकाण्ड पद्धति पाठ्यकम के अध्ययन से विद्यार्थियों को निम्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

- नित्य एवं नैमित्तक पूजा–पाठ के मन्त्र एवं अनुष्ठान की विधि का ज्ञान।
- ग्रह–शान्ति एवं पूजा होमवर्क पद्धति का ज्ञान।
- यज्ञोपवीत एवं गृह –प्रवेश आदि की विधि का ज्ञान।

[C] Contents: Unit wise Division

Unit-I नित्यनैमित्तककर्म पद्धति
Unit-II पूजा होम–कर्म पद्धति
Unit-III अनुष्ठान शान्ति–कर्म पद्धति
Unit-IV संस्कार कर्म पद्धति
Unit-V गृहारम्भ और प्रवेश कर्म पद्धति

[D] Readings

Books:

1. कर्म कौमदी–प्रो0 बृजेश कुमार शुक्ल
2. कर्मठगुरू–मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य
3. कर्मकाण्ड प्रदीप–जर्नादन शास्त्री पाण्डेय
4. पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक – उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ (उ0प्र0)
5. नित्य कर्म पूजा प्रकाश – गीता प्रेस, गोरखरपुर